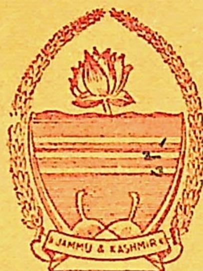
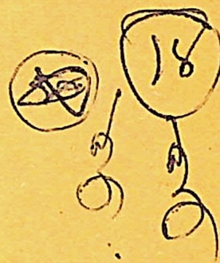




सदरि - रियासत
का
कशमीर असेम्बली
में
भाषण

मिस्टर स्पीकर और मेम्बरानि एसेम्बली।

मुझे पहले सदरे-रियासत की हैसियत से इस ऐवान को खताब करने का आज शरफ हासिल हुआ है। अब जबकि हमने नये दौर में कदम रखा है, और लोकराज में एक अहम तजर्बा करने का बीडा उठाया है यह जान लेना जरूरी है कि इस तरह की सियासी और आईनी तब्दीलियों से हमें ऐसे मौके मयस्सर हों कि हम रियासत भर की जनता के माद्दी, एख़लाकी और तहजीबी मैआरों को ऊंचा करने का बुनियादी मकसद पूरा कर पायें।

इसमें शक नहीं कि हमारी रियासत इस वक्त भी तरह-तरह की मुश्किलों में फंसी हुई है। भले ही अभी हम बिपताओं के जाल से पूरी तरह निकल न पाये हों, फिर भी मुझे यकीन है कि हम नाजुकतरीं मरहले को पार कर चुके हैं। यह कठिनाइयाँ भी जरूर सर की जायंगी क्योंकि जनता और उनके रहनुमाओं का अपनी रियासत के मुस्तकबिल में विश्वास है और वह हिम्मत, धीरज और दानिशमन्दी से काम करते रहते हैं। हमारे देश को जरूरत इस बात की है कि सभी लोग एका करके उस गरीबी और पसमांदगी को दूर करने की कोशिश में जुट जाय जो सदियों से भयानक सायों की तरह हमारी अनगिन्त जनता का नाक में दम करती आई है।

इत्मेनान की बात है कि १९४७ के वहशियाना हमले और दूसरे अफसोसनाक वाकआत से वेहाल होकर हमारी रियासत अब बहुत कुछ संभल चुकी है। फिर भी रियासत के कई बड़े इलाकों की अलाहिदगी से लोगों को चिंता हो रही है और तआज्जुब की बात नहीं अगर कई लोग यह देखकर वेचैन हो रहे हैं कि सलामती कौंसिल मसलए कश्मीर को बडी वेदर्दी से खटाई में डाल रही है! इस बात

से इनकार नहीं किया जा सकता कि बेसूद कहासुनी ने मामले को इतना लम्बा कर दिया है कि रियासत की जनता के मफाद खतरे में पड़ रहे हैं। इन मायूसियों के बावजूद, उम्मीद है कि जिस यू. एन. ओ. के शानों पर अन्तर्राष्ट्रीय समझबूझ और भाईचारे को वजूद में लाने का भार है, वह इस अहम मसले पर ज्यादा बेलाग और हकीकी सोचविचार करेगी, ताकि तुरन्त ही झगडे का जाइज़ और मुनसिफाना निपटारा हो सके।

अन्तर्राष्ट्रीय सियासियात के इस तज़बज़ब से यहाँ के लोगों को न तो लापर्वाह ही होजाना चाहिए न बेसब्र। मुल्क-भर को अन्दर की तमाम कमज़ोरियों के खिलाफ चौकस हो जाना चाहिए ताकि उनसे फायिदा उठाकर बाहरी दबाव हमारे मफ़ादों पर पानी न फेर सकें। हमारी रियासत के एक हिस्से में पिछले दिनों जो सूरते हालात रही उस पर इसी ज़ाविये से नज़र डालना होगी। पिछले दिनों जम्मू की पब्लिक ज़िन्दगी में एक ऐसा रुझान उभर आया है जिससे रियासत की बुनियादें हो खतरे में पड़ रही हैं। हकूमत को बड़ी तशवीश और दुख के साथ जम्मू की उस जारिहाना, बहकी-बहकाई और भटकाने वाली गडबड से निपटना पडा है, जो यों तो हिन्द-यूनियन से नाता-रिश्ता पक्का करने का दम भरती है, लेकिन अमली तौर पर इस सम्बन्ध के लिए एक भयानक खतरा बनती जा रही है। उम्मीद है कि ऐसी गडबड के जो नामुनासिब असरात हो सकते हैं उन्हें ध्यान में रखते हुए इसे एकदम बन्द कर दिया जाएगा, ताकि रियासत के तमाम हिस्सों में रहने वाले लोगों की एकता और तरक्की के अहम मसले एक ऐसे माहौल में तय पायें जो तंग-नज़री और फिरकावाराना आलाइशों से पाक हो। मुझे पूरा उम्मीद है कि रियासत-भर में सुखशांति चाहने वाले नर-नारी रियासत की तरक्की के इस कठिन समय में देशभक्ति और सूझबूझ का सबूत देंगे; जिससे पब्लिक ज़िन्ददगी में इस तरह के बिखराव पैदा करने वाले रुझान खत्म हो जायें।

पिचले दिनों रियासत के आइंदा रूपरंग और आईनी ढांचे के बारे में कुछ शुब्हात के चर्चे होते रहे; इन शुब्हात में रत्तीभर भी सदाकत नहीं।

जहाँ तक हकूमत का तअल्लुक है। इसने बारबार यकीन दिलाया है कि हिन्द-यूनियन के साथ रियासत का संबन्ध हिन्द के विधान और उसके बाद तय शुदा बातों के ठोस आधार पर मजबूती से टिका हुआ है।

जनता के नुमायंदे भी रियासत के लिए एक मौजून आईन का ढाँचा बनाने में लगे हुए हैं। बार बार इस बात को साफ किया जा चुका है कि तमाम शहरियों के लिए मसावी मौके और मुश्तरिका जिमेदारी के मुनसिफाना असूलों पर ही रियासत के मुस्तकबिल का ढांचा तैयार किया जाएगा। मुझे इस बारे में कोई शक नहीं कि इस ढांचे में एक ग्रोह या इलाके का दूसरे ग्रोह या इलाके पर छा जाने की निय्यत बिल्कुल नहीं होगी; बल्कि हर ग्रोह और इलाका अपनी मर्जी से एक मुश्तरिका मकसद के लिए काम करता हुआ तमाम रियासत की समाजी और सियासी एकता को मुमकिन बनाने में हाथ बटायेगा। यह तो मानी हुई बात है कि रियासत की एकता उस आईन में झलकनी चाहिए जो तमाम लोगों की तमन्नाओं को समेट ले और साथ ही उनके हकूक और अधिकारों की रक्षा करे।

जम्हूरी आईन जनता की ख्वाहिशों का आईनदार होता है। जाती गर्ज या पार्टी के मफाद के लिए इसकी सूरत बिगाडना ठीक नहीं। आईन बनाने का काम कठिन और सब्र आजमा है। इसके लिए रियासत में फिर से शान्ति का माहौल बनाना ज़रूरी है, ताकि आने वाले पुश्तों की किस्मत को बनाने बिगाड़ने वाली मामलों पर ठंडे दिमाग और बेलाग दिल से सोच विचार हो सके। इस काम के लिए यह भी जरूरी है कि हर तरह की सलाहियतों को तामीरी सरगर्मियों में लगा दिया जाय। ठीक इस समय जब कि रियासत का मुस्तकबिल बनाया जा रहा हो, हमारा देश गलत और तबाहकुन अगराज पर अपनी कुव्वतों को जाया नहीं कर सकता। इस भारी काम से तमाम लोगों की तामीरी कोशिशें उजागर हो जानी चाहिए ताकि मुस्तकबिल का ढाँचा हमारी रियासत के तमाम हिस्सों में रहने वाले लोगों को ज्यादा से ज्यादा मुतमइन कर सके। सेहतमंद और शांत माहौल पैदा करने के लिए जरूरी है कि तमाम इखतलाफों को भुला दिया जाय और आपसी विश्वास और भरोसे की भावना फिरसे जगाली जाय; ताकि सब के मन आम लोगों के बेहतरीन मफाद को मुमकिन

बनाने के वाहिद मकसद और तामीरी खयाल में लग जाय। मुझे आशा है कि ऐसी समझबूझ और भरोसा पनपाने की कोशिशों का फल तसल्ली-बखश होगा।

इसमें शक नहीं कि रियासत के तमाम हिस्सों में लोग तरह तरह के मसलों से दोचार हो रहे हैं। पिछले बरसों में हम जिस संकट से गुजरे हैं, उस के भारीपन को नजर में रखते हुए मुमकिन है कि कई एक मसलों पर और भी गम्भीर सोच विचार करना पड़े। ऐसे तमाम मसलों के ठीक ठीक हल निकालने के लिए हकूमत हमेशा कोशान रही है। मुझे यह कहते खुशी है कि हाल ही में इसने कई एक मामलों के बारे में हालात की छानबीन करने और इनसे ठीक तरह निपटने के उपाय और तरीके खोजने के लिए एक तहकीकाती कमीटी मुकर्रर की है उमीद है यह कमीटी जल्द ही अपना काम सफलता से पूरा करेगी। मुझे विश्वास है कि हकूमत भी अपनी तरफ से कमीटी के सुझावों पर पूरा पूरा ध्यान देगी।

इस बात से इनकार नहीं किया जासकता कि जगह जगह लोगों को एक जैसे मसलों का सामना करना पडता है। बद किसमती से हमारी रियासत माद्दी, माली और तकनीकी जराइ के लिहाज से बहुत पछड़ी हुई है। इस वक्त जो अहमतरीन मसला सभी जमातों के लोगों की इजतिमाई कुव्वतों को ललकार रहा है, वह यह है कि जो जराइ रियासत में पाये जाते हैं, उन सब को आम लोगों की जिन्दगी के मैआरों को ऊंचा करने के लिए तरक्की दी जाय। हमारा देश इसी मंजिल को अपने सामने रखे और इस पर पहुंचने के लिए मजबूती से दौड धूप करता रहे।

बीते दिनों में ऐसा करने के मौके बहुत कम मिलते रहे हैं। रियासत के जो थोड़े से जराइ थे, वह भी १९४७ की आफत से घट गये। एक वक्त तो सरकारी निज़ाम और पब्लिक काजधन्धों के कल पुर्जे भी

ठप्प होते दिखाई दिये। अफ़रातफ़री में आबादी बड़े पैमाने पर उखड़ गई। लेकिन खुशी की बात है कि हकूमत ने बड़ी मजबूती और होशमंदी से इन कठिन हालात पर काबू पाया। हकूमत की इन कोशिशों, जनता के शानदार तआवुन और हिन्द की फ़राख़दिलाना इमदाद से हालात धीरे धीरे सुधरते गये और आम दिनों की सी अमनो अमां की हालत फिर से क़ायम हो गई। रियासत की मजबूती और सालिमियत आज भी वक्त का सबसे बड़ा तकाजा है, और इसकी बुनियादें लोगों की एकता पर हैं, जो कि नई तामीर और तरक्की के लिए जरूरी है।

खुशी की बात है कि १९४८ से रियासत की माली हालत बराबर सुधरती जा रही है। इस वक्त रियासत जिन मुश्किलों और पाबंदियों में उलझी हुई है उनके बावजूद आमदनी धीरे धीरे बढती गई है। बजट की सूरत इस वक्त तसल्लीबख्श है अगरचे तरक्की के मन्सूबों की बढती हुई मांगें पूरी करने के लिए रियासत के जराइ को वुसअत देने के सिल-सिले में अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

यह भी कम खुशी की बात नहीं कि रियासत में गिजाई सूरत जो एक वक्त बहुत तशवीशनाक हो गई थी, अब काफ़ी सुधरती दिखाई दे रही है। मेरा विश्वास है कि हालात ने साथ दिया तो वह दिन दूर नहीं जब हम मुल्क की ग़िजाई जरूरतें मुल्क में ही पूरी कर सकेंगे।

हुकूमत जानती है कि जहां तक हो सके रियासत के ज़राइ को आम इन्सान के बेहतरीन मफाद के लिए इस्तेमाल करने की गरज़ से खर्च का प्रोग्राम किसी मन्सूबे के तहत तैयार करना तरक्की के लिए जरूरी है; क्योंकि मन्सूबाबंदी के आधार पर ही हर तरफा तरक्की मुमकिन है। मुझे यह कहते खुशी है कि हुकूमत ने कम-नसीब लोगों की अकसरियत की बेहबूदी पर असर डालने वाले अहम मसलों पर ग़ौर किया है और एक जामे स्कीम तैयार कर ली है, जिसे रियासत के पहले पन्ज-साला मन्सूबे के तौर चालू भी कर दिया गया है। इस मन्सूबे

में तहज़ीबी, समाजी और आर्थिक सभी तरह की तरक्की का ध्यान रखा गया है। यह वाक़आ बेमिसाल अहमियत का है और इससे तमाम जमातों के लोगों का जोशो खरोश और जज्ब-ए-इश्तिराक बेदार होजाना चाहिए। पन्जसाला मन्सूबे के इलावा तीन डिवेलप्मेंट ब्लाकों के आधार पर एक कम्यूनिटि प्रोजेक्ट शुरु करने का भी फैसला हो चुका है। तरक्की की यह स्कीम उन स्कीमों जैसी ही हैं जिन्हें प्लैनिंग कमिशन ने सारे हिन्द के लिए तैयार किया है। हिन्द सरकार पन्जसाला मन्सूबे की माली इमदाद के लिए आसान शर्तों पर धन उधार देना खुशी से मान गई है; और इसके इलावा मन्सूबे को चलाने के लिए कीमती मश्वरा और सहायता भी दी जा रही है।

पांच साल के दौरान में कुल १३ करोड की रकम खर्च करने की तजवीज है। हमारे देश का दारोमदार खासकर जिराअत पर है, और हमारे हां जिराअत की हालत बहुत पिछडी हुई है। इस बिना पर मनसूबे में रियासत के आर्थिक निजाम की इस बात पर खास जोर दिया गया है। मनसूबे की बडी बडी मदों का तअलुक सिंचाई, जमीन का तहफज वेटरनरी, पशुपालन, घरेलू संनअतें और दिहाती तालीम जैसे मामलों से है जो हमारे जिराअत के लिए बहुत अहम हैं।

मन्सूबे का बुनियादी मकसद यह है कि साइंसी तरीकों से जमीन की पैदावार को सुधारा और बढाया जाय। काश्तकार की भलाई के लिए जरई कानूनों में तब्दीलियां की जा चुकी हैं; और अब जरूरत इस बात की है कि वह पैदावार बढाने के नये से नये और तरक्की याफ्ता गुरों से आशना हो जाय ताकि धीरे धीरे उसकी जिन्दगी का मेअार ऊँचा हो सके। पिछडी हुई देहाती जनता को बेदार करने के लिए लगातार देख रेख और सहायता की जरूरत है। जमीन पर आबादी के दबाव को हल्का करने के लिए इमदादी धन्धों का इन्तजाम करना होगा; और मन्सूबे में घरेलू सनअतों को बढावा देने पर मुनासिब जोर दिया गया है। हमारा देश दस्तकारी के लिए काफी मशहूर है; लेकिन बाजारी भावों में आये दिन उतार चढाव के कारण इस सनअत को जबरदस्त धक्का लगा।

यह जान लेना ज़रूरी है कि जहां इन दस्तकारियों को फिर से जिन्दा करके फरोग देना है; वहां खास ज़ोर इनकी इफादियत पर ही दिया जाय।

चूंकि माकूल बर्की ताकत के बगैर रियासत के जराइ को तरक्की देना मुमकिन नहीं, इसलिए 'पन्ज साला मन्सूबे' में २३०.६५ लाख रुपये पन-बिजली की तरक्की के लिए रखे गये हैं। इस में वह 'सिन्ध-वादी पन-बिजली पावर प्रोजेक्ट' भी शामिल है जो सरकारी अन्दाजे के मुताबिक १६५४ के अन्त तक पूरा हो जाएगा। जम्मू की बढती हुई जरूरतों को पूरा करने के लिए जोगेन्द्र नगर (पंजाब) से भी काफी मिकदार में बर्की ताकत खरीदने का इन्तजाम किया गया है। उम्मीद है इस से कण्डी इलाकों में पानी के तोड़े की शदीद शिकायत बहुत हद तक दूर हो जाएगी, क्योंकि इस ताकत से वहां बहुत सारे टयूबवेल चालू किये जाएंगे। जब यह टयूबवेल चल पडेंगे तो यह बात यकीनी है कि इस इलाके के लोग सदियों से पानी की कमी के कारण जो सख्त तकलीफ महसूस करते रहे हैं, वह दूर हो जाएगी।

पांच साला मन्सूबे की एक और खसूसियत यह है कि सिंचाई और रस्लो रसायल की बढती का इन्तजाम किया जाय। इस सिलसिले में तजवीज़ किये गये सुधार पूरे होने पर रियासत के और भी बहुत सारे हिस्सों में यह काम शुरु होगा ताकि वहां के रहने वालों को भी सब तरह के सुखसाधन हासिल हो सकें।

मन्सूबे की एक बडी स्कीम बानहाल की सुरंग खोदने से तअल्लुक रखती है; और इसके लिए ३ करोड़ रुपये अलग रखे गये हैं। इस सिलसिले में मुफस्सल सर्वे हो चुकी है और उम्मीद है कि थोड़े ही वक्त में इसका काम भी शुरु किया जाएगा।

हिंद-सरकार के तआवुन से रियासत में कम्यूनिटी प्रोजेक्ट शुरू किया जा चुका है। इस प्रोजेक्ट के तीन हिस्से किये गये हैं, तीन 'डिवेलपमेंट

ब्लॉक'। एक कश्मीर सूबे में, दूसरा जम्मू सूबे में और तीसरा लद्दाख जिले में। कश्मीर में बडगाम और जम्मू में मानसर को जगहें इस गरज के लिए चुनी जा चुकी हैं। और वहां काम भी चल पडा है। लद्दाख में चूंकि आबादी बिखरी हुई है; इसलिए वहां तमाम जिले में काम चलाने की तजवीज है।

इस प्रोजेक्ट की कामयाब तकमील के बाद उम्मीद हैं कि देश के दूसरे पिछडे हुये इलाके भी इसी तरह की जामे तरक्की के लिए चुने जाएंगे।

तरक्की के इन सभी मन्सूबों में पैसे, तकनीकी अमले और अवामी तआवुन के सवाल पैदा हो जाते हैं। अब जब कि हुकूमत ने देश के लिए सामाजी मकसद का एलान किया है मुझे पूरी उम्मीद है कि इससे तमाम जमातों के लोगों की इज्तिमाई कुव्वतें हरकत में आएंगी।

मैं महसूस करता हूं कि बेकार बहसाबहसी में ज़ाया करने के लिए हमारे पास वक्त नहीं। देश को सभी शहरियों के सांझे जतन की जरूरत है ताकि पसमांदगी, जहालत और गरीबी की सदियों पुरानी बीमारियां जड़ से उखाड़ा जा सकें। तामीरी सरगरमी का एक नया दौर हमारे सामने चल पड़ा है। मौजूदा पीढी के बारे में कहीं यह न कहा जाये कि इसमें मौकों से लाभ उठाने के लिए लाज़िमी विश्वास, जुर्रत और बसीरत की कमी थी।

इस इजलास में ऐवान उन पालिसियों के बारे में गौरो-फिक्र और फैसले करेगा जिन पर आने वाले साल में हुकूमत को कारबन्द रहना होगा। मुझे कोई शुबह नहीं कि आप आम लोगों की ज्यादा से ज्यादा भलाई मुमकिन बनाने के जतन में गर्मजोशी से लगे रहेंगे। मुल्क के जराइ को इस तरह काम में लाना होगा कि जहां तक मुमकिन हो तमाम जमाअतों के लोगों को सन्तोष हो सके। हुकूमत ने जिन मसलों पर ध्यान दिया उनमें से एक का तअलुक सरकारी मुलाजिमों को तनख्वाहों से है। हाल ही में तो कई महकमों के ग्रेड बढा दिये

गये हैं, लेकिन पैसे की कमी के कारण तमाम ग्रेडों की तरमीम मुमकिन नहीं हुई। मुझे यह कहते खुशी है कि अब हुकूमत सभी ग्रेडों की तरमीम करने का इरादा रखती है। इसमें शक नहीं कि इस इकदाम से कम तनख्वाह वाले सरकारी मुलाजिमों को काफी सहारा मिलेगा। हुकूमत एक पब्लिक सर्विस कमीशन मुकर्रर करने की तजवीज पर भी गौर कर रही है।

जहां ऐसे मुफीद इकदामात जरूरी हैं, वहां बचत की गुंजाइश निकालने और सरकारी कामकाज में हर तरह की फजूल खर्ची दूर करने के वसीले भी ढूंढने होंगे। रियासत को चाहिए कि अपने जराइ का इस्तेमाल निहायत किफायत शआरी से करे और हकूमत तनदिही से इस बात पर गौर कर रही हैं कि सरकारी कामकाज की सलाहियतों को शरु किये बगैर किस तरह खर्चे में कमी की जा सकती है।

इस ऐवान पर भारी और वसी जिमेदारियां हैं, और आपके सामने जो काम हैं वह काफी अहम हैं। मेरी प्रार्थना है कि आपके सोचविचार में समझबूझ और दूरअन्देशी आपकी रहनुमाई करें ताकि हम हिन्द में रहनेवाले भाइयों के साथ साथ आजादी और खुशहाली की राह पर तेजी से आगे बढ़ते चलें

जय कश्मीर !


BROCA'S ARTISTIC PRESS
SRINAGAR KASHMIR